

यूनिट-3 दृष्टिबाधित बालक और समावेशित शिक्षा

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 शिक्षा का अर्थ
- 3.4 एकीकृत शिक्षा एवं समावेशित शिक्षा
- 3.5 एकीकृत शिक्षा की आवश्यकता
- 3.6 एकीकृत शिक्षा का महत्व
- 3.7 दृष्टिबाधिता का अर्थ
- 3.8 दृष्टिबाधित होने के कारण
- 3.9 दृष्टिबाधिता की पहचान
- 3.10 दृष्टिबाधितों का वर्गीकरण
- 3.11 दृष्टिबाधित बच्चों हेतु एकीकृत शिक्षा
- 3.12 उपसंहार
- 3.13 प्रश्नावली
- 3.14 अध्ययन हेतु प्रदत्त सामग्री का विवरण

3.1 प्रस्तावना :- शिक्षा का सामान्य अर्थ है सीखना और सीखने की क्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है, अर्थात् यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा मानव जीवन का आधार है, यही मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास निरन्तर करती रहती है। जिस प्रकार से नवजात शिशु न बोलना जानता है न चलना—फिरना न ही उसे लोक व्यवहार तथा समाज के रीतिरिवाजों का ज्ञान होता है, परन्तु फिर भी वह जैसे—जैसे बड़ा होता है वह अपने आसपास के वातावरण से सीखता है, देखता है तथा उसे अपने व्यवहार में लाता है, इस प्रकार से बालक पर शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है जिससे बालक का शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है। यह सब शिक्षा से ही संभव होता है। वह दिन—प्रतिदिन के क्रियाकलापों को देखता है, सीखता है और उन्हीं को अपने व्यवहार में लाता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक की मानसिक शक्तियों का विकास होता है औ जब मानसिक शक्तियों का विकास होता है तो बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। आत्मविश्वास हो जाने पर वो आसानी से उत्साह पूर्वक करते हैं तथा निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, और प्रत्येक कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास से करते हैं। इस प्रकार बालक समाज का उत्तरदायित्व पूर्ण करने वाला सदस्य बनकर राष्ट्र का जागरूक निर्माता बनता है।

इस यूनिट के माध्यम से हम शिक्षा का अर्थ, एकीकृत शिक्षा का अर्थ, दृष्टिबाधिता का अर्थ, प्रकार, दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान, दृष्टिबाधित होने के कारण, दृष्टिबाधिता का वर्गीकरण, दृष्टिबाधित बच्चों हेतु एकीकृत शिक्षा, के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

3.2 उद्देश्य :-

- शिक्षा का अर्थ समझ सकेंगे
- एकीकृत शिक्षा का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- दृष्टिबाधितों हेतु शिक्षा से परिचित हो सकेंगे।
- दृष्टिबाधिता के अर्थ को विद्यार्थी समझ सकेंगे।
- दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान कर सकेंगे।
- दृष्टिबाधिता के प्रकार, दृष्टिबाधित होने के कारणों का ज्ञात कर सकेंगे।
- दृष्टिबाधिता को रोकने के उपायों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

3.3 शिक्षा का अर्थ – सामान्य बोलचाल की भाषा में शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है सीखना जो कि शिक्ष धातु से बना है। सीखना हमारे जीवन की निरन्तर प्रक्रिया है। हम जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखते रहते हैं। यह बिना रुकने वाली निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें हम सभी प्राणियों से सीखते हैं चाहे वो बड़ा हो या छोटा मनुष्य हो या पशु पक्षी, हम एक-दूसरे को देखकर सीखते व समझते हैं।

उदाहरण – नवजात शिशु माता की बार-बार किसी शब्द की आवाज को सुनकर दोहराने लगता है। जैसे-बुआ, पापा, दादा, दादी आदि।

प्राचीनकाल से आज तक शिक्षा के संबंध में यही मुख्य धारणा रही है कि शिक्षा ही ज्ञानरूपी प्रकाश का स्रोत है, जिससे हम अपने जीवन को सरल व सुव्यवस्थित बना सकते हैं। यह मनुष्य के अंदर जो अभिव्यक्ति है अर्थात् गुण विशेषताएं और क्षमताओं का पूर्ण विकास करती है तथा वातावरण के समायोजन के साथ सहायता देती है। शिक्षा मनुष्य को आत्मविश्वासी,

स्वार्थहीन बनाती है इस प्रकार शिक्षा मनुष्य को ऐसे तैयार करती है कि वह समाज और देश के लिये हितकर होता है। हम शिक्षा को विभिन्न प्रकार के अर्थों से समझ सकते हैं :-

- | | |
|------------------|-----------------|
| 1. संकुचित अर्थ | 2. व्यापक अर्थ |
| 3. वास्तविक अर्थ | 4. शाब्दिक अर्थ |

1. **शिक्षा का संकुचित अर्थ :-** स्कूली शिक्षा को ही संकुचित शिक्षा कहते हैं जिसका अर्थ है शिक्षण संस्थानों में कुछ वर्षों की होने वाली पढाई या प्रशिक्षण से होता है। इसमें बालक को नियमित रूप से निश्चित स्थान अर्थात् स्कूलों में निश्चित व्यक्तियों अर्थात् शिक्षकों के द्वारा निश्चित साधनों अर्थात् पाठ्य पुस्तक तथा सहायक सामग्री द्वारा निश्चित पाठ्यक्रम अर्थात् पढने हेतु पाठ्यक्रम पढाया जाता है। जिससे बालक की मानसिक शक्तियों को विकास उन्नती एवं चेतना पूर्वक किये गये प्रयास के द्वारा होता है।

उदाहरण :- विद्यालयों द्वारा बालकों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा।

2. **शिक्षा का व्यापक अर्थ :-** शिक्षा का अर्थ मनुष्य के अर्जित अनुभवों से है जिसका प्रभाव उसके ऊपर जन्म से लेकर मृत्यु तक रहता है तथा इसके द्वारा बच्चे का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक चारित्रिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास अनुभवों के आधार पर होता है। जिससे वह अपना जीवन सरल व सुव्यवस्थित ढंग से यापन कर सकता है इस प्रकार व्यापक अर्थ में शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली एक प्रक्रिया है।

उदाहरण – मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें सोचने, समझने की शक्ति है। वह अपने आसपास के वातावरण से सीखता है जैसे चिटियों का कतार में चलना यानी अनुशासन, भाई चारा एवं एकता।

3. **शिक्षा का वास्तविक अर्थ** – शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक चारित्रिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास होता है जिससे वह अपने व्यवहार को अनुकूल बनाकर अपने जीवन को सफल बनाता है। अर्थात् शिक्षा व्यक्तित्व का विकास करती है। और बालक का सर्वांगीण विकास करती है।

उदाहरण – हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा देश को आजाद कराने।

4. **शिक्षा का शाब्दिक अर्थ** – शिक्षा शब्द शिक्ष धातु से बना है अर्थात् शिक्ष का अर्थ है सीखना जिस प्रकार से हम अपने बड़ों से अनुभवों से एवं संपर्क में आने वाले लोगों से निरन्तर सीखते हैं शिक्षा शब्द को अंग्रेजी में 'एज्यूकेशन' Education कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में एज्यूकेशन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एडुकेटम *Educatum* से हुई है। एडुकेटम, शब्द दो मूल शब्दों 'इ' तथा 'ड्यूको' के योग्य से बना है। 'ए' का अर्थ है 'अन्दर' से तथा 'ड्यूको' का अर्थ है 'अग्रसर' करना, अतः एडुकेटम का अर्थ हुआ अन्दर से बाहर की ओर लाना। अर्थात् शिक्षक द्वारा छात्र के अन्दर छुपी हुई योग्यता को बाहर प्रदर्शन के लिये प्रोत्साहित करना।

प्रगति की जांच :-

(नोट— दिये गये प्रश्नों के उत्तर रिक्त स्थान पर लिखे।)

प्र.1 शिक्षा के शाब्दिक अर्थ को समझाइए।

उत्तर—

प्र.2 शिक्षा के द्वारा मनुष्य का कौन-कौन सा विकास होता है।

उत्तर—

क्रियाकलाप :-

अपने आसपास के शाला त्यागी बच्चों को विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करेंगे।
उपायों को प्रदर्शित कीजिए—

3.4 एकीकृत शिक्षा एवं समावेशित शिक्षा :- एकीकृत का अर्थ है इकट्ठा करना और समावेशित यानी समावेशन करना अर्थात् वे बच्चें जिनको विशेष आवश्यकता है। उनके स्वयं की शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी के कारण वे पढ़ने लिखने के असमर्थ होते हैं या उनको विशेष संरक्षण एवं निर्देशन प्रदान करना होता है। ऐसे बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य बालकों के साथ आगे बढ़ना, पढ़ाना और उनकी शैक्षिक समस्याओं को समावेशन करना ही एकीकृत व समावेशित शिक्षा कहलाती है। सामान्य विकलांगता से ग्रस्त बच्चों को सामान्य शिक्षा तथा गंभीर विकलांगता से ग्रस्त बच्चों को मूलभूत शैक्षिक कौशल की आवश्यकता होती है उन बच्चों को शीघ्र अतिशीघ्र सामान्य स्कूलों में समावेशित किया जाता है यानी कि स्कूलों में प्रवेश दिया जाता है जिससे कि वह अपना जीवन शिक्षा के माध्यम से सुधार सकें। इस हेतु समाज तथा

सरकार द्वारा विभिन्न विद्यालयों को निर्माण किया गया है। जिसमें विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को प्रवेश दिलाया जा सके। यदि बच्चे के घर से विशेष विद्यालय की दूरी ज्यादा है तो उसे हम सामान्य विद्यालय में भी प्रवेश दिला सकते हैं ताकि विद्यार्थी शिक्षा (पढाई, अध्ययन) से वंचित न हो सके। इस हेतु हमारा 'शिक्षक' कर्तव्य है कि सबसे पहले विकलांगता की पहचान करे उसे बाद विद्यार्थी को सहायक उपकरण यानी कि वैल्पिक अंग, ट्रायसिकल, सफेद छड़ी, चश्मा आदि उसे दिलवाये जिससे उनकी पढाई के प्रति रुचि जाग्रत हो तथा पढ़ने में उन्हें सहायता प्रदान हो सके। ताकि उनमें स्वयं के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण की समाप्ति होगी, आगे बढ़ने की प्रेरणा, उत्साह एवं आत्मविश्वास जाग्रत होगा इस हेतु शिक्षक का उत्तरदायित्व है कि कक्षा के सामान्य विद्यार्थियों द्वारा इन बच्चों की उपेक्षा न करके उनका मनोबल को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया जाये एवं उनके साथ सामान्य बालकों की तरह बिना किसी भेदभाव के संतुलित व्यवहार किया जाये।

अतः एकीकृत किए जाने का अर्थ है विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनके सामान्य साथियों के साथ नियमित शाला में ही आवश्यक सहयोग देकर अध्ययन करने की सुविधा देना, यह प्रत्येक बच्चे की विशेष आवश्यकताओं को नियमित शाला में पूरा करने का प्रयत्न है। ऐसे बालक जो कि विकलांगता से ग्रस्त हैं, शाला के सभी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं इस प्रकार समेकित मॉडल में सभी बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही शिक्षा की मुख्यधारा में बनाए रखने का प्रयास है, तथा साथ ही समुदाय, पालक, शिक्षक, सामान्य बच्चे विशेष बच्चे सभी को इन बच्चों की आवश्यकता एवं जिम्मेदारी का पूर्ण ध्यान रहता है।

सामान्य विकलांगता से ग्रस्त बालक को सामान्य रूप से तथा गंभीर किस्म की विकलांगता से पीड़ित बच्चों के लिए मूलभूत शैक्षिक कौशल तैयार कर उन्हें सामान्य स्कूलों में एकीकृत किया जा सकता है सामान्य स्कूलों में विशेष कक्षाएं आयोजित करके अथवा विशेष स्कूलों के माध्यम से उनमें विशेष प्रकार का कौशल विकसित किया जा सकता है। ऐसे बच्चों को प्रोत्साहित कर पहले प्रशिक्षण देकर तथा माता-पिता को परामर्श देकर सामान्य स्कूलों में प्रवेश दिया जाता है।

3.5 एकीकृत शिक्षा की आवश्यकता :-

केन्द्र सरकार द्वारा विकलांग बच्चों के लिए समेकित शिक्षा योजना सन् 1974 में समाज कल्याण विभाग की ओर से शुरू की गई थी, बाद में यह योजना सन् 1982-83 में शिक्षा विभाग को हस्तांतरित कर दी गई। सन् 1992 में यह योजना अंतिम बार संशोधित की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य विकलांग बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना जिससे वे सामान्य स्कूलों में अध्ययन करते हुए अपने आप को योग्य बना सकें। इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को सहयोगी उपकरण विशेष अध्यापकों के लिए वेतन और विकलांग छात्रों के लिए अनुदान शामिल है।

3.6 एकीकृत शिक्षा का महत्व :-

समावेशी या एकीकृत शिक्षा यह कहती है, कि प्रतिभावन बच्चों के साथ-साथ सामान्य या जो सामान्य से कम हैं उनकी तरफ भी ध्यान दिया जाये जिससे वे भी अपनी प्रतिभा का विकास कर देश की उन्नति में योगदान कर सकें।

सामान्य विद्यालय सभी बालकों का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे असमर्थ बालकों में समाजीकरण की भावना का विकास विशिष्ट विद्यालय की अपेक्षा ज्यादा होता है और उनमें सामाजिक मूल्यों जैसे प्यार, दयालुता, समायोजना, सहायता, भाईचारा आदि का विकास होता है। शिक्षा को कार्य रूप देने का स्थान विद्यालय और प्रमुख कर्ता शिक्षक होता है, अतः शिक्षक को लोकतांत्रिक मूल्यों पर विश्वास करते हुए सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए समानता ही समावेशी शिक्षा का मुख्य ध्येय है।

समावेशी शिक्षा सामाजिक समानता के साथ-साथ हर बालक को उनकी अपनी क्षमता विकसित करने में मदद करती है जिससे वह अपने जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके और समाज एवं देश का हिस्सा स्वीकार करते हुए उसके विकास में योगदान कर सके।

प्रगति की जांच :-

(नोट— निम्न प्रश्नों के उत्तर नीचे लिखे रिक्त स्थानों पर लिखें)

प्र.1 एकीकृत शिक्षा से आप क्या समझते हैं।

उत्तर—

प्र.2 एकीकृत शिक्षा की आवश्यकता क्यों है।

उत्तर—

क्रियाकलाप —

अपने आसपास के विकलांग बच्चों के माता—पिता को आप किस प्रकार उनके बच्चों को सामान्य विद्यालयों में प्रवेश हेतु प्रेरित करेंगे।

3.7 दृष्टिबाधिता का अर्थ :- जैसा कि इसके नाम से ही प्रतीत होता है दृष्टिबाधिता दृश का अर्थ है देखना और बाधिता का अर्थ है रुकावट।

दृष्टिबाधिता शब्द परम्परागत शब्द है, इसके लिए दृष्टिहीन एवं आंशिक रूप से दृष्टिहीन शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है, अमेरीका में स्थापित दृष्टिहीनों के संघ ने इसके लिए दृष्टि अक्षमता, न्यून दृष्टि एवं आंशिक दृष्टि भिन्न-भिन्न शब्दों का उपयोग किया है।

दृष्टिबाधिता अथवा दृष्टिहीनता को अमेरीकन फाउण्डेशन फॉर द ब्लाइण्ड इन्साक्लोपिडिया ऑफ स्पेशल एज्यूकेशन और चिकित्सीय परिभाषा के अनुसार “जिसकी दृष्टि तीक्ष्णता यदि समुचित सुधारों के बावजूद 20/200 फीट या 6/60 मीटर तक रह जाती है वह दृष्टिबाधित समझा जाता है। यहां 20/200 फीट के सूचक अंक का तात्पर्य है, दृष्टि मानचित्र अथवा स्नेलेन चार्ट पर छपे बड़े अक्षर को जिसे सामान्य आंख 20 फीट की दूरी से ज्यादा देख सकती है दृष्टिबाधित इसे केवल 20 फीट की दूरी तक ही देख सकते हैं। इसके अलावा, अपनी दोनों आंखें बन्द न करने पर भी जिसे जलते हुए प्रकाश का संवेदीकरण (प्रत्यक्षीकरण) नहीं हो पाता है तथा जिनकी दृष्टि का कोणीय क्षेत्र 50 तक या इससे कम है वे भी दृष्टिबाधिता एवं दृष्टिहीनता तथा अंधेपन की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं, अर्थात् उन्हें बिलकुल भी दिखाई नहीं देता और वह अपना कार्य स्वयं करने में असमर्थ होते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और समाज कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के अनुसार “जिसकी दृष्टि तीक्ष्णता बेहतर आंख से दिन के प्रकाश में अच्छे सुधारक लेंसो या त्रुटि निवारक शीशे के प्रयोग के बावजूद ज्यादा नहीं पढ़

पाती या देख नहीं पाती ऐसे लोग दृष्टिबाधित अथवा दृष्टिहीन कहे जाते हैं, इसे शैक्षिक दृष्टिहीनता भी कहा जाता है।

अतः स्पष्ट है, कि दृष्टिबाधिता के अंतर्गत आंशिक और पूर्ण दोनों ही प्रकार के दृष्टिबाधित आते हैं।

3.8 दृष्टि बाधित के कारण :- दृष्टिबाधित होने के कई कारण हैं किन्तु कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख निम्न पंक्तियों में कर रहे हैं।

जन्म के पूर्व —

- गर्भवती महिलाओं की ठीक से देखभाल न होने के कारण जन्म लेने वाले बच्चे में दृष्टिबाधिता आ सकती है उसके आंखों की ज्योति क्षीण हो सकती है।
- पौष्टिक भोजन की कमी के कारण गर्भ में माँ को ठीक से प्रोटीन युक्त भोजन न मिलने के कारण बच्चा कमजोर हो जाता है और उसका आंखों पर प्रभाव पड़ता है।
- माता-पिता को रतिरोग तथा संक्रामक रोग हो जाने के कारण बच्चे की नेत्र ज्योति प्रभावित होती है।
- विटामिन ए की कमी के कारण माता के भोजन में विटामिन ए की कमी के कारण बच्चा दृष्टिहीन होता है।
- वंशानुगता के कारण भी बच्चा अंधत्व को प्राप्त होता है।
- गर्भधारण के समय संवेदना की वजह से संवेदनशील केटेरेक्ट हो जाता है जिसके कारण बच्चा दृष्टि बाधित हो जाता है।

- माता पिता के कारण नशीले पदार्थों का अत्यधिक सेवन करने से बालक जन्म के पूर्व ही अपने आंखों की ज्योति खो देता है।

जन्म के समय –

- मोनोकोकल सोर आईज के कारण दृष्टिबाधिता आती है।
- खसरा होने के कारण बच्चे को संक्रामकता आ जाती है और वह दृष्टिबाधित हो जाता है।
- अत्यधिक दस्त, मितली होने के कारण दृष्टिबाधिता संभव है।
- ऑक्सीजन का उँचा स्तर हो जाने के कारण बच्चा दृष्टिबाधित हो जाता है।
- विभिन्न नेत्र रोग एवं अन्य शारीरिक रोग हो जाने के कारण भी दृष्टिबाधिता आ जाती है।
- नवजात शिशु के जन्म के समय आंख में मोतियाबिंद का होना और ठीक से पता नहीं चलने पर वह कांच पत्थर में बदल जाने से भी दृष्टिबाधिता आ जाती है।

जन्म के बाद –

- आंखों की सूजन के कारण आंखों की ज्योति प्रभावित होती है।
- रोहें (ट्रोकोमा) के कारण आंखों की रोशनी प्रभावित होती है।
- दुर्घटना या चोट लगने के कारण बालक के सिर पर प्रहार करने से आंखें प्रभावित हो जाती हैं और आंखों की रोशनी चली जाती है।
- रसायन या दवाईयों के उपयोग के कारण आंखों की ज्योति खराब हो जाती है।

- खतरनाक खेल या पटाखों के कारण आंखों की रोशनी खराब हो जाती है।
- मोतियाबिन्द होने के कारण अधिक समय तक ध्यान नहीं देने से आंखों की रोशनी चली जाती है।
- सिर पर चोट या प्रहार होने से आंखों की रोशनी चली जाती है।
- आंखों का लाल होने के कारण आंखों की रोशनी चली जाती है।
- आंखों की पुतलियों का सीधा न रहना तथा अधिक मात्रा में आंखें झपकने के कारण आंखों की रोशनी प्रभावित होती है।
- अधिक मात्रा में नशीले पदार्थों का सेवन करने से आंखों की रोशनी खराब हो जाती है।
- रक्तचाप के बढ़ने के कारण आंखों की रोशनी खराब होती है।
- वाहन तथा कारखानों से निकलने वाले विशैले धूँ के कारण आंखों की रोशनी खराब होती है।
- सूर्यग्रहण के समय सूर्य को खुली आंखों से देखने पर आंखों की रोशनी चली जाती है।

प्रगति की जांच :-

(नोट— निम्न प्रश्नों के उत्तर नीचे लिखे रिक्त स्थानों पर लिखें)

प्र.1 दृष्टिबाधिता का अर्थ बताइए।

उत्तर—

प्र.2 दृष्टिबाधिता के प्रमुख कारणों का उल्लेख करिए।

उत्तर—

क्रियाकलाप —

अपने आसपास के क्षेत्र के भावी माता—पिता को आप किस प्रकार से पौष्टिक भोजन एवं स्वास्थ्य सुरक्षा के बारे में कैसे समझाएंगे वर्णन करिए।

3.9 दृष्टिबाधिता की पहचान –

- परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला होता है और माँ ही उसकी प्रथम गुरु है। अतः बच्चा सर्वप्रथम माता के पास ही रहता है। प्रारंभिक अवस्था में ही बालक के देखने उठने बैठने में ही उसकी समस्याओं का ज्ञान माता को हो जाता है वह निरन्तर अवलोकन करती रहती है। अतः माँ अवलोकन के आधार पर बच्चे को देखने और समझने में अंतर पाती है तो उसे तुरंत चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए और विशेष ध्यान रखना चाहिए यदि बच्चे की आंखों में सदैव लालिमा रहती हो, बार-बार आंखें डबडबा जाती हो, बच्चा आंखों को बार हाथों से रगड़ता है, बिना किसी सहायता के इधर उधर चलता हो, क्या वह दूर रखी वस्तु को ठीक से देख पा रहा है या पास रखी वस्तु का रंग व आकर समझ पा रहा है या ठीक से आसपास के वातावरण को व्यक्त कर पा रहा है। यह सब कुछ माता के अवलोकन पर आधारित है।
- विद्यालय में शिक्षक द्वारा बालक के शैक्षिक व्यवहार के द्वारा दृष्टिबाधिता को जाना जा सकता है। कक्षा में सामान्य बच्चों के साथ प्रवेश लेने पर वह विद्यार्थी श्यामपट पर लिखे हुये शब्दों को देख सकने में, पढ़ने पर असमर्थ होता है तथा लिखने में असमर्थता बताता है। इस प्रकार उसकी शैक्षिक रुचि पर प्रभाव देखकर हम उसकी बाधिता को पहचान सकते हैं व समझ सकते हैं।
- साथ में पढ़ने वाले विद्यार्थी द्वारा अपने साथी की देखने की क्षमता को जांचा जा सकता है। जैसे— शिक्षक द्वारा श्यामपट पर लिखना या बोलकर लिखवाना तथा पाठ पढ़वाते समय होने वाली समस्या को

देखना और समझना तत्पश्चात अपने साथियों शिक्षक एवं बच्चे के माता पिता को समस्या से अवगत कराना।

- समाज तथा पड़ोसियों द्वारा बच्चों को देखना तथा उसकी समस्या से माता पिता को अवगत कराना। उदाहरण— जैसे बच्चा अपने साथियों को साथ खेलता तो उसकी दृष्टिहीनता से संबंधित कोई भी घटना घटित होती है तो माता—पिता से पहले उसके साथी को पता चलता है और वह उसके बाद उसके माता पिता के पास ले जाता है समस्या के बारे में बताता है तब उसे माता—पिता नेत्र रोग विशेषज्ञ के पास ले जाते हैं जिससे उसका आगे इलाज संभव होता है और यदि गंभीर चोट लगती है तो उसका उपचार किया जा सकता है तथा उसकी शारीरिक एवं मानसिक रूप से उसे तैयार कर उसकी समस्या का निवारण किया जा सकता है।

3.10 दृष्टिबाधितों का वर्गीकरण :-

जो बालक नेत्रहीन होते हैं, उन्हें तो बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है, परन्तु कमजोर नजर वालों की पहचान कठिन होती है, कई बार तो शारीरिक दोष को छिपाने के कारण बालकों में दृष्टिदोष पाया जाता है।

- नेत्रहीन या अन्ध बालक— ऐसे बालक जो कि जन्म से ही या बाद में अपने नेत्रों की ज्योति पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से खो देते हैं। इस वर्ग में वे सभी दृष्टिबाधित बालक आते हैं जो जन्म से ही पूर्ण रूप से देख नहीं पाते या अंधे होते हैं या बाल्यावस्था में पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से अपनी आंखों की ज्योति को खो देते हैं। ऐसे बच्चों की

पहचान आसानी से हो जाती है इनका जीवन पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर रहता है इन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। आज के समय पर इनको सामान्य विद्यालयों में सामान्य बच्चों के साथ पढ़ाया जाता है जिससे की इनमें आत्म विश्वास जाग्रत हो सके और यह बच्चे आत्मनिर्भर बन सके।

- आंशिक दृष्टिबाधित बालक या कमजोर नजरवाले बालक— ऐसे बालकों की नजर कमजोर होती है इनकी दूर दृष्टि एवं निकट दृष्टि क्षीण होती है, अर्थात् यह बच्चे आसानी से दूर रखी वस्तु को देख पाने में तथा पास रखी हुई वस्तु को देखने में असमर्थ होते हैं। ऐसे बच्चे जो अपनी दृष्टि को उपचार एवं चश्मे के उपयोग से पूरा कर सकते हैं, अपनी दृष्टि को सुधार सकते हैं एवं अपने अध्ययन को पूर्ण कर सकते हैं एवं जीवन को सरलता से पूरा कर सकते हैं। इस प्रकार के बालकों को दृष्टि दोष के आधार पर दो वर्गों में बांट सकते हैं —

1. निकट दृष्टि दोष

2. दूर दृष्टि दोष

1. **निकट दृष्टि दोष :-** ऐसे बालक जिनको पास में रखी वस्तुएं देखने में असमर्थता होती है और उन्हें ठीक से दिखाई नहीं देता है वह निकट दृष्टि दोष से ग्रसित होते हैं।

2. **दूर दृष्टि दोष :-** ऐसे बालक जिनको पास में रखी वस्तु आसानी से दिखाई देती है परन्तु दूर रखी वस्तु को देखने और समझने में असमर्थता होती है यह बच्चे अपने दैनिक कार्य आसानी से नहीं कर पाते इनको सहारे की यानी कि दूसरे व्यक्ति से मदद लेना होती है।

प्रगति की जांच :-

(नोट— निम्न प्रश्नों के उत्तर नीचे लिखे रिक्त स्थानों पर लिखे)

प्र.1 नेत्रहीन एवं आंशिक दृष्टिबाधिता में क्या अन्तर है।

उत्तर—

प्र.2 दृष्टिबाधित बच्चे के शैक्षिक मनोबल को बढ़ाने में आप कैसे सहायक हैं।

उत्तर—

क्रियाकलाप –

आप अपने सहपाठी की जो दृष्टिबाधित है उसकी अध्ययन के क्षेत्र में किसी प्रकार सहायता करेंगे।

3.11 दृष्टिबाधित बच्चों हेतु एकीकृत शिक्षा –

प्रत्येक बच्चे की अपनी विशेषता है और उसी विशेषता के साथ वह सीखता है। प्रत्येक बच्चे के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर उसकी छिपी योग्यता को उभारना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

विकलांग बालको सहित सामान्य कक्षाओं में सभी बालाकों की शिक्षा हो इसी को मुख्यधारा में मिलाना कहते है, जिससे सभी बच्चों को शिक्षा का अवसर मिल सके तथा वे ज्ञान प्राप्त कर सकने में सक्षम हो सकेंगे। शिक्षा के

क्षेत्र में समावेशी का अर्थ है, विशिष्ट बालकों के साथ सामान्य कक्षा में ही पढ़ना, उनको सामान्य बालकों के साथ विशेष सेवाएं प्रदान करना तथा विद्यालय की गतिविधियों में शामिल करना जिससे असमर्थ बालक अपने आपको पृथक् न समझकर विद्यालय का भाग (हिस्सा) ही समझे। समावेशी शिक्षा व्यापक समावेशन की मांग करती है, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनके सामान्य साथियों के साथ नियमित शाला में ही आवश्यक सहयोग देकर अध्ययन करने की सुविधा देकर उनकी आवश्यकताओं का पूरा करने का प्रयत्न है।

दृष्टिबाधिता शारीरिक विकलांगता के क्षेत्र में सबसे दुख भरी अवस्था मानी जाती है। सदी के प्रारम्भ से ही इनका जीवन समाज में दया, सहानुभूति पर आधारित रहा है। समाज में इनको दया के आधार पर देखा जाता है परन्तु इनकी आंतरिक शक्ति एवं प्रेरणा से ही हमें सूरदास जैसे महान कवि एवं लुईब्रेले जिन्होंने चक्षुहीनों को स्पर्श के माध्यम से पढ़ाने हेतु सफल विधि देकर चक्षुहीनों पर बड़ा उपकार किया। वर्तमान समय में चक्षुहीन विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण ग्रहण करने के अतिरिक्त क्रिकेट व अन्य खेल गतिविधियां पूरी कर वायुयान से कूदने एवं अन्य अदभूत प्रदर्शन करने में सफल हुये हैं।

इन बालको की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है बालक अपनी अक्षमता के कारण भी समाज में समुचित समायोजन स्थापित कर सके। इसके लिए विशिष्ट रूप से शिक्षक प्रशिक्षित होने की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से विद्यार्थी पूर्ण रूप से शिक्षा प्राप्त कर सके एवं वर्तमान परिपेक्ष्य का ज्ञानार्जन कर सके एवं समाज की मुख्यधारा से संलग्न हो सके। इस हेतु शिक्षक की

सकारात्मकता एवं निरन्तर सीखने की लालसा आवश्यक है जिससे वह अपने दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक जिज्ञासा को शांत कर सकने में समर्थ हो सके। दृष्टिबाधितों के लिए लिखित रूप में ब्रेललिपी एक महान उपलब्धि है जो कि विद्यार्थियों में नवचेतना एवं सफलता प्रदान करती है। छः विभिन्न उभरे हुए बिन्दु संकेतों के माध्यम से यह लिपि मोटे कागज पर अंकित की जाती है। दोनों हाथों की अंगुलियों के अग्रभाग से उभरे बिन्दु संकेतों को स्पर्श करके अक्षर संकेतों को जाना जा सकता है। इसका प्रशिक्षण विशेष शिक्षा संस्थानों द्वारा दिया जाता है।

विशेष प्रकार के उपकरणों की सहायता से ऐसे विद्यार्थियों को लिखना, पढ़ना सामान्य गणित, भूगोल और अन्य स्कूली विषयों की शिक्षा दी जा सकती है।

खेलकूद, व्यायाम, योगासन, संगीत, पास्परिकवार्ता, संवाद, चर्चा आदि के द्वारा इनमें आत्मविश्वास जागृत किया जा सकता है तथा सामाजिक समायोजन करने में सहायता दी जा सकती है तथा शिक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

भारत के सजग नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य है, कि समाज में ऐसे विशिष्ट बालकों की उनकी आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान कर उन्हें निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर करें एवं उनकी समस्याओं का समाधान करें।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पास बाह्य दृष्टि पूर्ण नहीं होती परन्तु ज्ञान कौशल के द्वारा इनकी आंतरिक क्षमता का विकास कर वातावरण में उपस्थित प्रत्येक वस्तु का अनुभव कर सकते हैं और समाज में समायोजन कर सकते हैं।

नेशनल एसोसियेशन फॉर द ब्लाइण्ड इस क्षेत्र में कार्य करने वाली व्यक्तिगत और सामाजिक संस्थानों के क्रियाकलापों को समन्वित करने का प्रयास करती है।

दृष्टिबाधितों के लिए देश में अन्धविद्यालय साथ ही औद्योगिक गृहशाला, शरणकार्यालय इनके शिक्षण तथा प्रशिक्षण हेतु चलाई जा रही है। शिक्षक के शोध एवं प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय दृष्टिहीन विकलांग संस्थान” देहरादून में है जो सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत है।

- आष्टाकॉन – इसमें एक कैमरा होता है जो प्रतिबिम्बों को अक्षरों के रूप में रूपांतरित करता है और अंगुलियों के स्पर्श से अध्ययन कर सकते हैं। यह मशीन 5 से 11 अक्षरों को रूपांतरित करने की क्षमता रखती है। इसके प्रशिक्षण से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- कुर्जवेल अध्ययन मशीन – यह एक छोटा कम्प्यूटर होता है जो छपे अंश को ध्वनि के रूप में रूपांतरित करता है। इस मशीन पर प्रशिक्षण से दृष्टिहीन कम्प्यूटर जैसी मशीन का उपयोग सरलता से कर सकते हैं।
- लघुबेला रिकार्डर – इस प्रणाली के अध्ययन में टेप कैसेट का उपयोग किया जाता है। इससे एक साथ अनेक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। गणित के अध्ययन में इस प्रशिक्षण का विशेष लाभ देखने को मिलता है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि “राष्ट्रीय दृष्टिहीन विकलांग संस्थान” दृष्टिबाधितों को आर्थिक और व्यवसायिक रूप से सम्पन्न बनाने हेतु विभिन्न प्रकार से प्रशिक्षित करता है तथा वर्तमान समय में सड़क पर चलने-फिरते योग्य बनाने हेतु उन्हें योग्य बनाता है तथा ब्रेललिपि के माध्यम से प्रशिक्षित

करता है जिससे वे टेलीफोन आपरेटर बिजली की बाइंडिंग, धातुकला, बुक बाइंडिंग, कुर्सी बुनना, टोकरी बनाना, मोमबत्ती बनाना एवं उपयोगी सामान बनाकर अपना जीवन-यापन कर सके इस हेतु प्रशिक्षित करती है। इस हेतु संस्था ने इनके लिए विभिन्न इकाइयाँ जैसे प्रशिक्षण विभाग, ब्रेल विभाग, गतिशीलता विभाग, रोजगार विभाग तथा विशेष पुस्तकालय की व्यवस्था की है।

इस प्रकार से भारत में कई सरकारी एवं निजी संस्थाएं हैं जो दृष्टिबाधितों के लिए प्रतिदिन उनके जीवन को सरल एवं उपयोगी बनाने हेतु निरन्तर प्रयास कर रही हैं, जिससे वे अपने जीवन को आत्म निर्भर हो पूर्ण कर सकें एवं समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें।

प्रगति की जांच :-

(नोट— निम्न प्रश्नों के उत्तर नीचे लिखे रिक्त स्थानों पर लिखें)

प्र.1 दृष्टिबाधितों हेतु वर्तमान समय में कौन सी लिपि का उपयोग किया जा रहा है वर्णन करें।

उत्तर—

प्र.2 दृष्टिबाधितों के ज्ञानवर्धन में कौन-कौन से साधन प्रमुख हैं वर्णन करिए।

उत्तर—

क्रियाकलाप —

अपने आसपास के क्षेत्र दृष्टिबाधित बच्चों को नई तकनीक से आप कैसे परिचित करायेंगे, विस्तार से लिखिए।

3.12 सारांश :-

इस प्रकार से हमने इस यूनिट के माध्यम से शिक्षा का अर्थ, एकीकृत शिक्षा एवं समावेशित शिक्षा, एकीकृत शिक्षा की आवश्यकता, एकीकृत शिक्षा का महत्व, दृष्टिबाधिता का अर्थ, दृष्टिबाधित होने के कारण, दृष्टिबाधिता की पहचान, दृष्टिबाधितों का वर्गीकरण, दृष्टिबाधित बच्चों हेतु एकीकृत शिक्षा के बारे में अध्ययन किया एवं विद्यार्थियों को पूर्ण योग्यता प्राप्त हुई, जिससे कि वे दृष्टिबाधिता का अर्थ एवं प्रकार को समझ सकें।

3.13 प्रश्नावली :-

- दृष्टिबाधिता का अर्थ बताते हुए इसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए?
- दृष्टिबाधित होने के मुख्य कारणों का वर्णन करिये?
- एकीकृत शिक्षा से क्या आशय है।
- समावेशित शिक्षा का क्या महत्व है।
- वर्तमान समय में यह विशिष्ट बच्चों के लिए किस प्रकार से सहायक है?
- विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को कैसे समाज की मुख्य धारा से जोड़ सकते हैं?
- आप क्या सोचते हैं, दृष्टि बाधित विद्यार्थियों के उत्थान हेतु कौन-कौन से प्रयास किए जाने चाहिए जिससे वे अपना जीवन पूर्ण रूप से आत्म निर्भर होकर पूरा कर सकें।

3.14 संदर्भ ग्रंथ :-

- अहमानन स्टेनली जे (1962) “दृष्टिबाधित किशोरों का मनोसामाजिकरण” साइकोलिंग्वा एसोसिएशन ऑफ इंडिया, आगरा
- एनस्को एम. (1994) “स्पेशल नीड्स इज द क्लासरूम” ए टीचर एज्यूकेशन गाइड किंग्सले : यूनेस्की
- कौशिक ब्रा.ना. (1997) “विकलांग शिक्षा सिंधु” राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी: जयपुर
- गुड बी.सी. (1973) “डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन” मेग्रा हिल बुक कं: न्यूयार्क
- गुप्ता एस.के. (1989) “ अ स्टडी ऑफ स्पेशल नीड्स प्रोविजन फॉर द एज्यूकेशन ऑफ चिल्ड्रन विद विजुवल हैण्डीकेप्स इन इंग्लैण्ड एंड वेल्स एंड इन इंडिया एसोसिएशनशिप स्टडी, इंस्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशन लंदन।
- चांद किरण (2005) “शिक्षा समाज और विकास” कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स: नई दिल्ली
- चौहान एस.एस. (1979) “इनोवेशन्स इन टिचिंग एण्ड लर्निंग प्रोसेस” विकास पब्लिशिंग हाउस: कानपुर
- पाण्डेय, रामशकल (2003) “उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक” विनोद पुस्तक मंदिर: आगरा
- भार्गव, महेश (2011) “विशिष्ट बालक शिक्षा एवं पुनर्वास” राखी प्रकाशन: आगरा